[Jain *, Vol.4 (Iss.12): December, 2016]
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21
ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

परमारवंशीय कला

डॉ. सुषमा जैन[*1]
[*1] प्राचार्य शुभांकन फाईन आर्टस् कालेज इन्दौर (म.प्र.)

Cite This Article: डॉ. सुषमा जैन. (2016). "परमारवं शीय कला." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 4(12), 242-246. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v4.i12.2016.2413.

1. भूमिका

नवीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध में मालवा मे एक नवीन राजवंश का उदय हुआ जो परमार राजवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस वंश का सर्वप्रथम राजा उपेन्द्र माना जाता है। उसने अपना जीवन राष्ट्रकूट अथवा गुर्जर प्रतिहारों के सामन्त के रूप में आरंभ किया।

उपेन्द्र का उत्राधिकारी पुत्र वैरिसिंह प्रथम था। उसके शासन काल की कोई भी घटना ज्ञात नहीं है। वैरिसिंह का उत्तराधिकारी सीयक प्रथम था। पद्मगुप्त वैरिसिंह और सीयक प्रथम का नामोल्लेख नहीं करता इससे अनुमान होता है कि, ये दोनों साधारण योग्यता के सामन्त शासक थे। सीयक प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र वाक्पति प्रथम राजा हुआ। डॉ. गांगुली के मतानुसार इसने अपने स्वामी राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय के साथ प्रतिहार नरेश महीपाल के विरूद्ध युद्ध किया था। उसके राज्यकाल की और कोई घटना ज्ञात नहीं है।

वाक्पति का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वैरिसिंह द्वितीय सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल में कन्नौज के प्रतिहार शासक महिपाल प्रथम ने अपने सामन्त सरयुपार के कलचुरि वंशी भमान देव के साथ मिलकर मालवा पर आक्रमण किया तथा उसे जीत कर उज्जयिनी में एक प्रतिहार शासन नियुक्त किया। परन्तु उदयपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कुछ समय बाद ही वैरिसिंह ने फिर से मालवा जीत लिया।

वैरिसिंह द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र सीयक द्वितीय गद्दी पर बैठा वह बड़ा प्रतापी और योग्य राजा सिद्ध हुआ। परमार वंश का यही सर्वप्रथम स्वतंत्र राजा था, जिसने राष्ट्रकूटों की प्रभुता को अस्वीकार कर अपने वंश को स्वतंत्र घोषित कर दिया। 'नवसाहसांक चरित' के अनुसार उसने हूण मण्डल के राजा को पराजित किया। संभवतः इसने चालुक्य नरेश अवनिवर्मन योगीराज द्वितीय से भी युद्ध कर उसे पराजित किया। उसे चन्देल वंश के नरेश यशोवर्मन के साथ भी युद्ध करना पड़ा जिसमें वह पराजित हो गया और चन्देल का साम्राज्य बेतवा नदी तक विस्तृत हो गया। उसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, राष्ट्रकूटों के साथ युद्ध कर उन्हें पराजित करना। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय की मृत्यु के पश्चात् सीयक ने राष्ट्रकूटों से संबंध विच्छेद कर स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। राष्ट्रकूट नरेश खोट्टिग ने उसका दमन करने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। नर्मदा नदी के तट पर दोनों पक्षों द्वारा भयंकर युद्ध लड़ा गया। जिसमें सीयक विजयी रहा। सीयक

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

द्वितीय ने राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट तक खोट्टिग का पीछा किया और उस नगरी को खूब लूटा। इस विजय के परिणाम स्वरूप परमार राज्य दक्षिण में ताप्ती नदी तक विस्तृत हो गया।

972 इस्वी के लगभग सीयक द्वितीय की मृत्यु हो गयी थी उसके पश्चात् उसक पुत्र मुंज सिंहासन पर बैठा। 'प्रबंध चिन्तामणी' के अनुसार मुंज सीयक का गोद लिया हुआ पुत्र था। जिसके गोद लेने के पश्चात् सीयक के अपने पुत्र सिन्धुराज का जन्म हुआ।[1] परन्तु सीयक ने मुंज को ही अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय लिया। मुंज बड़ा पराक्रमी राजा सिद्ध हुआ। उसके दो नाम वाक्पति राज (द्वितीय) तथा उत्पलराज काफी प्रचलित थे। अभिलेखों में उसके विरूद्ध अमोघवर्ष, पृथ्वीवल्लभ तथा श्री वल्लभ का सहयोग किया गया है। विक्रम सवंत 1031 से 1046 के बीच उसके छः अभिलेख प्राप्त हुऐ हैं। इन समकालीन अन्य अभिलेखों से उसके राज्यकाल की घटनाओं का पता चलता है।

मुंज को अपने पड़ोसी राजा त्रिपुरी के कलचुरियों से युद्ध करना पड़ा समकालीन त्रिपुरी शासक युवराजदेव द्वितीय था जिसने उसे पराजित कर उसकी राजधानी त्रिपरी पर अधिकार कर लिया था। परंतु वह कलचुरी राज्य के किसी भाग को भी अपने राज्य में मिला नहीं सका। मुंज के मेवाड़ के गुहिल वंशी शासको से भी युद्ध करना पड़ा समकालीन गुहिलवंशी शासक शक्तिकुमार था। मुंज ने उस पर आक्रमण कर उसे पराजित किया तथा उसकी राजधानी आघाट को खूब लूटा। मुंज ने चाह्मान शासक बलिराज पर आक्रमण कर आबू पर्वत तथा किरादु तक के प्रदेश तक अपना अधिकार कर लिया पर बलिराज की राजधानी पर वह अधिकार न कर सका। कन्थेरी अभिलेख से ज्ञात होता है कि, मुंज को संभवतः हूणो से भी युद्ध करना पड़ा।

मुंज ने गुजरात के चालुक्य वंशी शासक मूलराज के राज्य पर भी आक्रमण किया। मूलराज ने उसे रोकने की कोशिश की किंतु उसने पराजित होकर सपरिवार मारवाड़ के मरूस्थलों में शरण ली। मुंज की मृत्यु 993 ई. से 998 के बीच मानी जाती है। उसके साम्राज्य का विस्तार पूर्व में विदिशा से लेकर पश्चिम में साबरमती तक और उत्तर में झालावाड़ की दक्षिण सीमा से लेकर ताप्ती नदी तक विस्तृत था।[2]

मुंज के बाद उनका छोटा भाई सिंधुराज उत्तराधिकारी बना। सिंधुराज ने 997 से 1011 ई. सवंत् तक राज्य किया। इनका कोई भी अभिलेख अभी तक प्राप्त नही हुआ है। किन्तु भोज के सभी अभिलेखों में इनका उल्लेख आता है। साहित्यिक स्त्रोत इनकी उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कुन्तल नरेश, वागड़ के शासक कौसल नरेश, लाट नरेश, अपरान्त व मुरल शासक को पराजित करने का श्रेय सिन्धुराज को देते है।[3] इसके साथ–साथ नाग शासक के साथ मैत्री व शशिप्रभा (नाग राजकुमारी) के साथ विवाह का श्रेय भी उन्हें दिया गया है।[4]

सिन्धुराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भोज प्रथम हुआ। उसकी विजय तथा उसकी गणना भारतीय इतिहास के महान शासकों में होती है। उसके राज्यकाल में ग्यारह अभिलेख उज्जैन, देपालपुर, धार, बेटमा, भोजपुर तथा मेंहदी से प्राप्त हुए हैं। ये अभिलेख विक्रम सवंत् 1074 तथा 1091 के बीच के हैं। इन अभिलेखों तथा इनके समकालीन अन्य अभिलेख तथा भोज द्वारा रचेत ग्रंथो से उसके राज्यकाल के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।[5]

राजाभोज परमार वंश का महान विद्याप्रेमी तथा कलानुरागी शासक था। उसने ज्योतिष, काव्य, योग, राजनीति, धर्म, शिल्प, नाटक आदि से संबंधित लगभग 34 ग्रंथों की रचना की।[6] इन्होंने शिल्प शास्त्र पर दो ग्रंथों समरांगण सूत्रधार'' तथा 'युक्तिकल्पतरू' का निर्माण किया है। पहला ग्रंथ ही महत्वान है, इसमें चित्रकर्म के विषय पर भी पर्याप्त चर्चा हुई है। यह ग्रंथ विष्णुधर्मोत्तर पुराण पर ही आधारित है।[7]

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

इस युग में ऐसी दो विश्वकोषात्मक रचनाओं का निर्माण हुआ था जिसमें अनेक विषयों के अतिरिक्त चित्रकला के विधि –विधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इन ग्रंथो में भोज (1005–1054 ई.) का समरांगण सूत्रधार और सोमेश्वर भूपति (12 वीं शताब्दी) का मानसोल्लास प्रमुख है। इन ग्रन्थों को पढ़कर तात्कालीन चित्रकला की समृद्धि का पता लगाया जा सकता है।[8]

राजा भोजकृत समरांगण सूत्रधार में अध्याय 70 से 83 तक मूर्ति रचना विधि के वर्णन के बीच–बीच में चित्र रचना विधि की भी व्याख्या की गई है। अध्याय 71 में चित्रकला संबंधी महत्वपूर्ण बातों का वर्णन करते हुए कहा है कि, चित्रकला सब कलाओ में प्रमुख है सभी वर्गो के व्यक्ति इससे आनंदित होते हैं। चित्रांकन के स्थान भित्ति पट्ट अथवा वस्त्र हैं। 72वें अध्याय में भूमि बंधन के हेतु लेप बनाने की विधि का वर्णन है।[9]

इसके साथ गीले रंगों की रचना विधि का भी उल्लेख है 73 अध्याय में तुलिका के उपयोज्य प्रलेप बनाने की विधि का वर्णन है। 74 वें अध्याय में भूमिबंधन के भिन्न–भिन्न भागों में भिन्न–भिन्न वस्तुएँ अंकित करने का निर्देश है। 75 वें अध्याय में माप वर्णित किये गये है। 76 वें अध्याय में मूर्तियों की विलक्षणता तथा 77 वें अध्याय में आकृतियों के विभिन्न अंगो की रचना तथा उनमें प्रयोज्य रंगो का निर्देश है।[10]

इस प्रकार इस ग्रंथ में राजभवनों के उपयुक्त विषय, चित्रोंद्देश्य पट्टचित्र, पट–चित्र, क्रिया आठ भेद (1) वर्तिकर्म (2) कृतबंध (3) लेखामान (4) वर्णव्यतिक्रम (5) वर्तना (6) मान उन्मान विधि (7) नवस्थान (8) हस्तमुद्राओं आदि का विवेचन है। तदुपरान्त, प्रमाण, चित्रांग, भूमिबंध, लेखाकर्म, अण्डकप्रमाण, कार्यप्रमाण, ताल, प्रतिमा–लक्षण, सामग्री, प्रतिमा विधान, दोष स्थान, लक्षण, पुरूष भेद, नारी भेद, रसों एवं मुद्राओं का सम्यक्, विचार किया गया है। यह भी कहा गया है कि, शास्त्रानुसार कर्म अथवा कर्मानुसार शास्त्र जानने से काम नहीं चलता, दोनों का ज्ञान अनिवार्य है और दोनों का सम्यक ज्ञान रखने वाला चित्रकार ही श्रेष्ठ होता है।

भोज प्रगाढ़ पंडित विद्याप्रेमी राजा था। उसने विभिन्न विषयों पर दो दर्जन से अधिक ग्रंथ लिखे थे वह विद्वानों का महान आश्रयदाता था वह एक महान निर्माता भी था। इन्हीं कारणों से वह भारत के महान शासकों में गिना जाता है।

भोज की मृत्यु से परमार राज्य में अस्थिरता व अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी, उदयादित्य ने चाह्मान शासक दुर्लभ राज तृतीय के सहयोग से चालुक्यों व कर्नाटों से युद्ध कर मालवा के छिने हुए प्रदेश पुनः प्राप्त किये और गुजरात के सोलंकी नरेश कर्ण को पराजित कर मालवा में अपनी खोई हुई सत्ता पुनः प्रतिष्ठित की।

उदयादित्य एक कुशल योद्धा ही नही वरन कलाप्रेमी तथा विद्यानुरागी भी था उन्होंने भोज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं का धार, उज्जैन व ऊन में विस्तार किया। तथा उन्होंने शिव मंदिर उदयेश्वर का निर्माण करवाया। जो उदयपुर में स्थित है। उदयादित्य की दो रानियाँ एक सोलंकी तथा दूसरी वाघेला थी। वाघेला रानी का बड़ा लड़का रणधवल था और सोलंकी रानी का लड़का जग्गदेव था, जो रणधवल से छोटा था।[11] अनुमान यह है कि उदयादित्य के चार पुत्र थे जगदेव परमार उदयादित्य के सबसे छोटे चौथे पुत्र थे जिन्होंने पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य चतुर्थ के राज्यपाल सामंत के रूप में आंध्र, चक्रदुर्ग व द्रोरसमुन्द तक आक्रमण कर सफलता पाई वे कभी भी मालवा की गद्दी पर नहीं बैठे।

अंतिम परमार राजा राय महल देव ने 1305 ई. तक राज्य किया इनकी मृत्यु के साथ ही मालवा से परमारों का स्वामित्व समाप्त हो गया।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

मोड़ी, हिंगलाजगढ़ तथा कंवला का वैभव इसी राजवंश की देन है। परमार शासकों ने मोड़ी, मोड़ी–मण्डल के नाम से पश्चिमी मालवा के प्रशासनिक मुख्यालय का दर्जा प्राप्त किया था। मणियों के निर्माता शिल्पियों की श्रेणी वहां निवास करती थी। इस क्षेत्र का उन्होंने अनेंक सरोवरों, मंदिरों से श्रृंगार किया परिणामतः यह क्षेत्र पश्चिमी मालवा की हृदय स्थली बन गया।[12]

परमार शासकों के समय मूर्तिकला एवं वास्तुकला का अत्यंत विकसित रूप देखने को मिलता है। अनेंक स्थानों पर परमारों द्वारा बनाये गये मंदिर अपने काल के वैभव एवं भव्यता की कहानी कहते है।

इन्दौर एवं समीपवर्ती स्थानों से प्राप्त परमारयुगीन मंदिर एवं मूर्तियाँ शिलालेख एवं मुद्रायें इस भू–भाग पर परमार वंश के आधिपत्य की पुष्टि करते है।[13] गांव–गांव कस्बे–कस्बे, वन–वन, नदी, तालाब, सरोवर पर परमार कालीन मंदिर, मंदिरावशेष, प्रतिमायें, प्रतिमावशेष, पाये जाते है। किसी भी प्राचीन टीले अथवा गांव खेडे से थोड़ी मिट्टी खिसकी कि पूर्ण अथवा खंडित प्रतिमायें झांकने लगती है।

परमार युग 10वीं से 13वीं शती तक भारतीय तथा मालवीय मनीषी कला एवं संस्कृति का प्रबल उद्घोषक ही नही रहा बल्कि उसे मूर्त रूप देने में भी पीछे नही रहा। पूरा मालवा प्रदेश मंदिर से भर गया था। इस युग में यह उस युग की कला की एक विशिष्ट पहचान बन गई। उस समय के शासकों में भोजदेव प्रथम (1000–1055) सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय शासक हुए हैं राजाभोज ने कलात्मक मंदिरों तथा भवनों से पूरा मालवा भर दिया। कहते हैं कि उसने 104 मंदिर बनवाये तथा लगभग इतनी ही पुस्तकें भी लिखी। 105 वां मंदिर भी बनवाया पर वह अपूर्ण रह गया। कहीं वह अपूर्ण मंदिर भोजपुर का शिवमंदिर तो नहीं ? जो भोपाल के पास है। यह सर्वमान्य है कि, यह मंदिर राजा भोज द्वारा ही बनवाया गया था। और उसकी निर्माण योजना का रेखांकन वहीं एक शिला पर उत्कीर्ण है तद्नुसार ही इस भवन का निर्माण हुआ है।

धार की भोजशाला पर दो स्तंभो पर दो नागबंध अलग–अलग प्रकार के उत्कीर्ण है एक पर वर्णमाला है तो दूसरे पर संस्कृत धातु प्रत्ययमाला। इसकी ही अनुकृति खरगोन जिले के ऊन के एक मंदिर में भी उत्कीर्ण है। इनमें से एक वर्णमाला का वैसा ही नागबंध उज्जैन के महाकाल मंदिर में भी शिला पर रेखांकित है। धातु प्रत्ययमाला में दो नाग आमने–सामने फन उठाये रेखांकित है परंतु वर्णमाला में एक ही नाग फन ताने प्रदर्शित है। ये भोज के उत्तराधिकारी उदयादित्य – नरवर्मा द्वारा बनवाये गये थे जो उन पर लिखे श्लोकों से स्पष्ट होता है। लगभग 11वीं शताब्दी में चित्रकला के कुछ अवशेष हमें उदयेश्वर मंदिर जिसे नीलकंठेश्वर मंदिर भी कहा जाता है, वह प्राप्त हुए है। यह स्थान बीना भेलसा रेल्वे स्टेशन के बीच है। यह मंदिर जिस प्रकार ऐतिहासिक तथा धार्मिक दृष्टि से उल्लेखनीय है, उसी प्रकार कला की दृष्टि से भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें सुरक्षित अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि, मंदिर का निर्माण 1059 ई. (1116 वि.) से 1080 ई. (1137 वि.) के बीच हुआ। इसको राजा उदयादित्य की आज्ञा से बनवाया गया था। मंदिर का बाह्य भाग उत्कीर्णित चित्रों से सज्जित है जिसमें अनेंक देवी देवताओं के भव्य रूप अंकित है। उसमें ब्रहमा, विष्णु, गणेश, कार्तिकेय आठों दिग्पाल, शिव और दुर्गा आदि देवताओं के चित्र बने है।[14]

12 वीं शताब्दी में कुछ चित्र युद्ध के बने इन सब चित्रों में वही परम्परागत शैली दिखाई दी। जिसमें चौड़ा माथा, लंबी आंखे, तीखी नाक, दाढ़ी एवं मूंछ आदि बनाई गई। बाघ एवं एलोरा की गुफायें भी 7 वीं से 11वीं शताब्दी के बीच की मानी जाती है। एलोरा के कैलाश मंदिर में सुन्दर चित्र देखने को मिलते है। वेरूल (एलोरा) के भित्ति चित्रों को अपभ्रंश शैली का उत्कृष्ट नमूना बताया जाता है, जिसका निर्माण भोज के भतीजे उदयादित्य ने 1059–1070 ई. में करवाया था।[15]

इन चित्रों में मनुष्य की आकृति बहुत कम है इसमें जो सबसे सुन्दर चित्र हैं उसमें एक घोडे और घुड़सवार का चित्र बहुत सुन्दर है। यह गुजरात के जैन अभिलेख से मिलते है। इन चित्रों में गोलाई है और आंखे

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

अधखुली है। यह चित्र भी 12वी से 13वीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। 12वीं शताब्दी के 'परमारधिराज' अभिलेख से हमें यह पता चलता है कि, 12वीं शताब्दी में ही परमारी राजा जो मालवा में थे और दक्खन के राजाओं में जो युद्ध हुआ था उसका चित्रण भी एलोरा में मिलता है।[16]

परमार राजाओं की स्थाई सत्ता लगभग 350 वर्षो तक मध्य भारत में बनी रही। संपूर्ण काल पर यदि दृष्टिपात किया जायें तो इनका शासन 948 ईस्वी से 1305 ईस्वी तक अक्षुण्ण बना रहा लेकिन कला का विकास 10वीं शताब्दी में राजाभोज के समय ही प्रचुर रूप में हुआ। वे विद्वान और कला के संरक्षक थे उनके लिखे ग्रंथ आज भी कला एवं साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनके कारण मालवा कला एवं संस्कृति का केन्द्र बन गया और उसकी कीर्ति चारों ओर फैल गई।

सन्दर्भ सूची :-

1. मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – पृष्ठ क्रं. 71
2. मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – पृष्ठ क्रं. 72
3. एच.वी. त्रिवेदी – इ.इ., जिल्द 7 पृष्ठ क्रं. 16–20
4. नवसाहंक चरित्र सर्ग – II
5. मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – पृष्ठ क्रं. 73
6. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास – पृष्ठ क्रं. 110
7. डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास – पृष्ठ क्रं. 110
8. डॉ. रीता प्रताप – भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास – पृष्ठ क्रं. 107
9. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 117
10. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम – पृष्ठ क्रं. 117
11. रागमाला जिल्द – 1
12. कु. श्वेता केतकर – मालवा की मराठाकालीन चित्रकला – लघुशोध पृष्ठ क्रं. 12
13. डॉ. अजीत रायजादा – इन्दौर पृष्ठ क्रं. 2
14. वाचस्पित गेरोला – भारतीय चित्रकला – पृष्ठ क्रं. 227
15. डॉ. रीता प्रताप – भारतीय मूर्तिकला का इतिहास – पृष्ठ क्रं. 119
16. कु. निधि शुक्ला – मध्यकालीन मालवा के लघु चित्र – पृष्ठ क्रं. 17–18